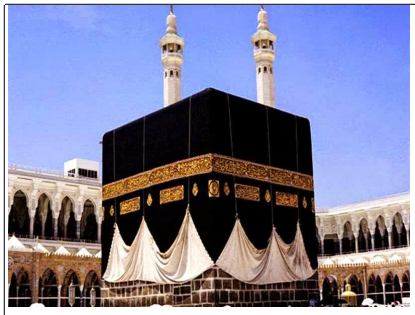

मोमिन का मक़सदे हयात

तौहीदो रिसालत का नारा दुनिया में लगाने निकले हैं ,
फारान की चोटी का नग़मा घर घर में सुनाने निकले हैं.

कुरआन की दौलत सीनों में,सुन्नत का फरेरा हाथों में ,
गुल्हाए सदाक़त की ख़ुशबू दिल दिल में बसाने निकले हैं.

ये इल्म तो मेरे आक़ा की बारिश की बरसती बूँदें हैं ,
तस्नीमे नबुव्वत के क़ासे बस पीने पिलाने निकले हैं.

सजदा तो सिर्फ अल्लाह को करें,ताज़ीम है अल्लाह वालों की,
गुल्दाने अक़ीदा में हम तो ये फूल सजाने निकले हैं.

जिन्हें आता करना फर्क नही,अल्लाह के अपने गैरों में,
ऐसी फासिको-फाज़िर सोचों को सूली पे चढ़ाने निकले हैं.

जब कूच का मौसम आ जाए, हर दिल ये गवाही देता हो,
लो काम तो क़ाफी कर बैठे, अब जन्नत जाने निकले हैं.

अपना तो ये जज़्बा है आसिफ, हर सांस में सई पैहम हो,
न थकने थकाने निकले हैं न सोने सुलाने निकले हैं.

तक़रीरः डॉ.मुहम्मद अशरफ आसिफ जलाली साहब

email: labbaikyarasoolallah_indore@rediffmail.com

मदनी इल्तिजाः इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो ब-ज़रिअए ईमेल मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

अल्लाह तबारक़ व तआला की हम्दो सना और हुज़ूरे अक़रम,नुरे मुजस्सम,शफ़ी-ए-मोअज़्ज़म, दस्तग़ीरे-ए-जहां, ग़मगुसारे ज़मां अहमदे मुजतबा जनाबे मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारग़ाह में हदिया दुरूदो सलाम अर्ज़ करने के बाद। वारिसाने मिंबरो मेहराब, अरबाबे फ़िक्रो दानिश, अस्हाबे मुहब्बत, हामिलीने अक़ीदा-ए-अहले हक़ अहलेसुन्नत- मोहतशिम व मोअज़्ज़िज़ हज़रातो ख़्वातीन! रब्बे जुलजलाल के फ़ज़्ल और तौफ़ीक़ से इन सआदत अफरोज़ लम्हात में हमारी गुफ्तगु का मौजू है **"मोमिन का मक़सदे हयात"**

मेरी दुआ है कि ख़ालिक़े कायनात इस काविश को अपने दरबार में क़ुबूल फरमाए और अल्लाह हम सब की हाज़िरी क़ुबूलो मंजूर फरमाए- हम अपने रब का जितना शुक्र अदा करें कम है कि उस ने हमें कैसी तौफ़ीक़ दी कि इन नूरानी लम्हात के अंदर सेहत-ओ-आफियत के साथ हमें रूहानी ग़िज़ा के इस दस्तरख्वान पर हाज़िरी की तौफ़ीक़ मिल रही है। और इस तौफ़ीक़ के बग़ैर एक लम्हा भी हम ऐसे प्रोग्राम का इंतिज़ाम नही कर सकते थे।

मोहतशिम सामईन हज़रात

रसूले अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारग़ाह के साथ अपनी निस्बते ख़ास की वजह से हर दीनी प्रोग्राम में हमें जो एक चाशनी मयस्सर आती है,वह यक़ीनन हर दिल महसूस करता है। लफ्ज़ बोलना कोई मुश्किल काम नही,मुसलसल गुफ्तगू और मुसलसल फसाहत व बलागत के मौती बिखेरना ये कोई मुश्किल नही- लेकिन बारग़ाहे नबुव्वत की तजल्ली और रसूले अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार से तस्दीक़ की जो चाँदनी होती है उसका नज़ारा कुछ नया ही होता है-और हम ने हर दौर में और हमारे अस्लाफ ने सुफ्फा से लेकर आज तक हमेशा बाक़ी सारी चीज़ों को ठुकराते हुए इस बात का झँडा बुलंद किया-

माहे मदीना अपनी तजल्ली अता करे,
ये चाँदनी तो पहर दो पहर की है.

हक़ीक़त में वही नूर है जो अल्लाह तआला ने रसूले अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़द्दस और मुनव्वर दिले अत़हर की बरक़त से अता फरमाया है।जब उसी वसातत से इस क़ुरआन को पढ़ा जाता है और हदीस शरीफ का बयान किया जाता है तो अल्लाह तआला सिर्फ लफ्ज़ों को मआनी ही नही बल्कि लफ्ज़ों को ज़िंदगी भी अता फरमा देता है और जिस वक़्त वो अल्फाज़ कानों में दाख़िल होते हैं तो सिर्फ वह कानों की लज़्ज़त को पूरा नही करते बल्कि सहने दिल में चिरागा़ भी कर देते हैं।

मोहतशिम सामईन हज़रात आज का मौजू बड़ा अहम मौजू है **"मोमिन का मक़सदे हयात"**।कुछ मक़ासिद और उसूल आज इंसानी सोच ने बना लिए हैं और उस को मेयार बना लिया है कि फलां शख़्स का नाम है और फलां कामियाब है लेकिन कुछ वह मेयार हैं जो हमारे ख़ालिक़ ने हमें अता फरमाए हैं और बहैसियते मोमिन उस मेयार को सबसे बड़ा मेयार समझते हैं जो परवरदिगार ने हमें अता फरमाया है।

अल्लाह तआला सूरह हश्र में इरशाद फरमाता है وَالْعَصْرِ इस ज़माना ए मेहबूब की कसम اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ बेशक तमाम इंसान ख़सारे में हैं और नुकसान में हैं। اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ लेकिन वह लोग ख़सारे में नही हैं जो ईमान ले आए और उन्होने नेक काम किये। وَ تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَ تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ और एक दूसरे को हक़ की ताक़ीद करते रहे एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत करते रहे। क़ुरआन मजीद की इस सूरह मुबारक़ा में मआनी व मफाहिम के लिहाज़ से पूरे क़ुरआन मजीद का ख़ुलासा मौजूद है। अल्लाह तआला ने सब से पहले वल-अस्र से एक क़सम का आग़ाज़ किया। इसमें मआनी के लिहाज़ से चार बड़े मआनी को पेशे-नज़र रखा गया है।

①. अल-अस्र का पहला मआनाः अस्र से मुराद दहर है और मुतलकन वक़्त, इसकी बात की जा रही है।
②. अल अस्र का दूसरा मआनाः अस्र से मुराद दिन का पिछला पहर है।
③. अस्र का तीसरा मआनाः अस्र से मुराद सलातुल अस्र यानि अस्र की नमाज़ है।
④. चौथा माअनी जो लज़ीज़ माअनी है " अस्र से मुराद रसूले अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व्सल्लम का ज़माना ए मुक़द्दस है।

अब इस मआनी में मुनासिबत ये है कि एक है ज़मान और एक है मक़ान, तो जब अल्लाह तआला फरमाता है لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ कि इस मक़ान की क़सम मै इस लिए उठा रहा हूँ कि तुम इस मक़ान में जल्वागर रहे हो, इस शहर में इस जगह में इस ज़मीन में तो जिस तरह मक़ान के अंदर आप की जलवागिरी की वजह से मक़ान की क़सम उठाई गई तो एसे ही ज़मान के अंदर जलवागिरी की वजह से ज़मान कि क़सम उठाई गई। मै ज़मान की क़सम उठाता हूँ इस वास्ते कि ऐ मेरे मेहबूब तुम इस ज़मान में जल्वागर होने वाले हो।

अल्लाह तआला इसके बाद अपनी गुफ्तगु यूँ आगे बढ़ाता है- اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ बेशक सारे इंसान ख़सारे में हैं और घाटे में हैं मगर उन में से जिन की आगे शान बयान की जा रही है वो घाटे में नही। उन की चार सिफात बयान की गई हैं। चार की चार सिफात का उन में होना ज़रूरी है। चारों शानें इकठ्ठा रहेंगी, फिर किसी तरह का खसारा उन को नही होगा। और चारों सिफात का जो हामिल हो जाएगा,और चारों फूलों का गुलदस्ता जिस के किरदार में मौजूद होगा, अल्लाह तआला फरमाता है मेने उस को खसारे वाले इंसानों के झूँड से और गिरोह से और उस जमाअत और तबक़े से निकाल कर मुमताज़ कर दिया है।दुनिया में भी उन के चेहरों पर उजाले होंगे और क़यामत में भी आँखें चमक रही होंगी।जुलूस में नूर के साथ रवां होंगे और फिरदौस के बालाखानों में उन लोगों को बुलंद मुक़ाम अता फरमाया जाएगा। इस मुक़ाम पर अल्लाह तआला ने सबसे पहले उस बात का ज़िक्र किया हक़ीक़त में जिसकी कलीदी हैसियत है और वह ईमान है। अगर ईमान मौजूद है तो फिर आमाल का फायदा है, अगर ईमान नही तो आमाल से किसी तरह बंदे को फायदा नही तो सबसे पहले फरमायाः اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا नुक़सान पाने वाले लोगों से उन को जुदा कर रहा हूँ और बरी कर रहा हूँ कि जो ईमान ले आए, जिन के दिल नूरे ईमान से चमक उठे और जिन के दिलों में ईमान की तजल्ली रोशन हो गई, ईमान को चिरागा़ हो गया ये वह लोग हैं जिन को ख़सारा नही है और जिन को अल्लाह तआला की रहमत का नज़ारा दिया गया है इस मुक़ाम पर ईमान की जो हैसियत है उस को समझने के लिए मोमिन होना कितना बड़ा मन्सब है और कितनी बड़ी शान है।

क़ुरआन मजीद की सिर्फ चंद आयात बतौरे ख़ुलासा लिख रहा हूँ कि अल्लाह तआला ने मोमिन को किस तरह अपने अज़ीम मक़ासिद और मरातिब के लिहाज़ से तज़किरे में भी सब से मुमताज़ कर दिया है और बुलंदो बाला ज़ातों के साथ रब्बे क़ायनात ने बार-बार मोमिन का तज़किरा किया है। मिसाल के तौर पर↴

① **मुराक़बा के लिहाज़ सेः** मुराक़बा के लिहाज़ से अल्लाह तआला ने मोमिन को अपने और अपने रसूल अलैहिस्सलाम के साथ ज़िक्र किया है- रब्बे जुल-जलाल का सूरह तौबा कि आयत नंबर 105 में फरमान है।وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَیَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ऐ मेहबूब अलैहिस्सलाम आप फरमा दें "ऐ लोगों तुम अमल करो तुम्हारे अमल को अल्लाह भी देखेगा और तुम्हारे अमल को अल्लाह तआला के नबी अलैहिस्सलाम भी देखेंगे, तुम्हारे अमल को मोमिन भी देखेंगे। मुराक़बा निगरानी और इस एजाज़ के लिहाज़ से अल्लाह तआला जब दावते अमल दे रहा है और फिर शौक पैदा करना चाहता है कि अच्छा अमल करो कि तुम्हें कुछ ज़ातें देख रही हैं और वह ज़ातें कौन-कौनसी हैं जो तुम्हारे अमल को देख रही हैं ? अल्लाह तआला फरमाता है मै भी देखूँगा,देखता हूँ, मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम भी देखते हैं और मोमिन भी देखते हैं। अल्लाह तआला ने इस मुराक़बा की शान में अपने साथ और अपने मेहबूब अलैहिस्सलाम के साथ मोमिनों की अज़मत का तज़किरा भी फरमा दिया।

② **विलायत के लिहाज़ सेः** विलायत के लिहाज़ से अल्लाह तआला ने मोमिनों के बुलंद मन्सब का ज़िक्र किया है। अल्लाह तआला सूरह माईदा कीआयत नंबर 55 में इरशाद फरमाता हैः اِنَّمَا وَلِیُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوا अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि बेशक तुम्हारा वली अल्लाह भी है और तुम्हारे वली रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी हैं وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوا और ईमान वाले भी तुम्हारे वली हैं। ईमान वाला होना कितना बड़ा मन्सब है कि तीसरे नंबर पर मुसलसल इसका ज़िक्र आ रहा है। अल्लाह तआला अपना नाम लेकर अपने मेहबूब अलैहिस्सलाम का नाम लेकर तीसरे नंबर पर उन की हैसियत को उजागर कर रहा है। अब वली का जो माअनी भी करोगे अज़मत निखर के आएगी। वली बमाअनी नासिर ले लो, वली बमाअनी मददगार ले लो, वली बमाअनी क़रीबी, वली बमाअनी निग़रान, वली बमाअनी दोस्त और वली बमाअनी मुहिब्ब और वलौ बमाअनी मेहबूब। जिस अलिहाज़ से भी देखोगे एक चमकता हुआ माअनी सामने आ जाएगा। आम इंसानों में से जो कारे ज़िल्लत में गिरे हुए

थे ईमान वालों को ईमान ने कहाँ कहाँ तक पहुँचा दिया कि अल्लाह तआला तीसरे नंबर पर उन्ही का तज़किरा फरमा रहा है।

③ **मवालात के लिहाज़ से:** मवालात के लिहाज़ से अल्लाह तआला ने मोमिनों को अपने साथ ज़िक्र किया।
सूरह तहरीम की आयत नंबर 4 में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है: فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِيْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम के लिए क्या हैसियत है फरमाया मै भी मौला हूँ और जिब्राईल भी मौला हैं और सालेह मोमिन भी। सबसे पहले अपना तज़किरा किया दूसरे नंबर पर हज़रते जिबाईल अलैहिस्सलाम का तज़किरा किया और तीसरे नंबर पर सालेह मोमिनों का ज़िक्र कर दिया और लफ्ज़ मौला का अल्लाह तआला ने अपने सिवा जिब्राईल अलैहिस्सलाम पर भी इतलाक़ कर दिया और जिब्राईल अलैहिस्सलाम के अलावा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुलामों पर जो ख़ाकी गुलाम हैं, उन पर भी इतलाक़ कर दिया। और अब मौला का माअनी अल्लाह के लिहाज़ से यक़ीनन कुछ और होगा और बन्दों के लिहाज़ से यक़ीनन इसमें फर्क़ होगा। अल्लाह और लिहाज़ से मौला है और बन्दों को और लिहाज़ से मौला क़रार दे रहा है कि मै मेहबूब अलैहिस्सलााम का मौला हूँ। अब वह मौला बमआनी ख़ालिक़ है, मौला भी जानता है कि उसने पैदा किया है और जिब्राईल भी मौला हैं मौला बमआनी ख़ादिम है और सहाबा भी मौला हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी के ताज उन्होने पहने हुए हैं और दिन-रात झंडे लेकर राहे हक़ में निकले हुए हैं और अल्लाह तआला फरमाता है कि हमने उन को लफ्ज़े मौला का ताज पहना दिया है।

④ **सलावात के लिहाज़ से:** ख़ालिक़े क़ायनात जल्ला जलालोहू ने अपने मेहबूब अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया कि उन की ज़िंदगी ए मुबारक़ का हर लम्हा इतना प्यारा लगता है कि मै देखता हूँ तो उन को सलाम कहता हूँ, मै देखता हूँ तो उन पे दुरूद भेजता हूँ और सलात कहता हूँ। अब अल्लाह तआला जब अपनी इस चाहत का ज़िक्र कर रहा था तो सिर्फ अपना ही नही ज़िक्र किया साथ हामिलीने अर्श का भी ज़िक्र कर दिया जो अल्लाह तआला का अर्श उठाए हुए हैं और उस के जो सारे फरिश्ते हैं उन का भी और सिर्फ उन का ही नही फिर उन खाकी बंदों का भी ज़िक्र फरमा दिया। अल्लाह तआला सूरह अहज़ाब की आयत नंबर 56 में इरशाद फरमाता है: اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا
बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते रसूले अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुसलसल हर लम्हा सलात भेजते हैं, ऐ मोमिनों मै तुम्हे भी इस शर्फ से नवाज़ना चाहता हूँ कि जो सौग़ात मै भेजता हूँ अपनी हैसियत की तुम भी भेजा करो, तो खालिक़े क़ायनात ने इस मुक़ाम पर भी जो बड़ा अहम मरतबा था मोमिन की शान को उजागर कर दिया। फरिश्तों के बाद रब्बे जुल जलाल ने इन मोमिनों का तज़किरा फरमा दिया

⑤ इज़्ज़त के लिहाज़ से: अल्लाह तआला ने जब इज़्ज़त का ज़िक्र किया तो अल्लाह तआला ने मोमिन को अपने साथ बयान किया। सूरह मुनाफिकून की आयत नंबर 108 में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है। وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ इज़्ज़त अल्लाह के लिए और इज़्ज़त अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए है और इज़्ज़त मोमिनों के लिए है। अब देखो अल्लाह तआला ने क्या मरतबा दे दिया। एक शख्स अगर यही इसका ख़ाकी पैकर है लेकिन उसको ईमान हासिल नही तो वह हैवानों से भी बुरा है। यही कुरआन क़ाफीरों के बारे में कहता है क़ाफिर तो डंगरों से भी बदतर हैं और जिस वक़्त ये ईमान जल्वागर होता है तो अल्लाह तआला कितनी अज़मत दे रहा है। इज़्ज़त मेरी भी है और मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम की भी है और उन के मानने वालों की भी है। हालांकि दूसरे मुक़ाम पर वाज़ेह कह रहा था इज़्ज़त मेरी भी है और मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम की भी है और उन के मानने वालों की भी है। हालांकि दूसरे मुक़ाम पर वाज़ेह कह रहा था कि इज़्ज़त तो सिर्फ अल्लाह की है लेकिन यहाँ तक़सीम कर दी ताकि लोगों को पता चल जाए मेरे बंदों की इज़्ज़त मेरी वजह से है उसे गैरों की इज़्ज़त न मानना,उन की इज़्ज़त से कोई मेरी इज़्ज़त में कमी नही हो जाती बल्कि उनकी इज़्ज़त मेरी ही इज़्ज़त क़रार पाती है। हांलाकि जब वाज़ेह फरमा दिया कुरआन मजीद की तीन-चार आयात मेम कि इज़्ज़त मेरी है और यहाँ तक़सीम कर दिया तो पता चला कि ये वहम भी निकाल दो, जब मै खुद देता हूँ उस से कोई शिर्क़ नही बनता। मै भी इज़्ज़त वाला हूँ ,मेरे नबी अलैहिस्सलाम भी इज़्ज़त वाले हें और उन का कलिमा पढ़ने वाले बेइज़्ज़त नही वो भी इज़्ज़त वाले हैं। अब इज़्ज़त के अंदर भी मोमिनों को अल्लाह तआला ने अपने साथ बयान लिया और और ये शर्फ ज़ाहिर कर दिया कि कितना उँचा मरतबा है तुम्हारा कि तुम ने कलिमा ए इस्लाम पढ़ा, हम ने तुम्हें इज़्ज़तों के ताज पहना दिये हैं।

⑥ इताअत के लिहाज़ से: अल्लाह तआला ने इताअत के लिहाज़ से मोमिनों को सीट अता फरमा दी। अल्लाह तआला सूरह निसा की आयत नंबर 59 में इर्शाद फरमाता है। اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ अब اُولِي الْاَمْرِ न तो अल्लाह है और न ही उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं चुँकि पहले बक़ाईदा उन का ज़िक्र आ चुका है اَطِيْعُوا اللّٰهَ अल्लाह तबारक़ व तआला की इताअत व اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ए कलिमा ए इस्लाम पढ़ने वालों तुम में से हम ने ये सीट भी कुछ को दे दी है जो मन्सबे इज्तिहाद पर फाईज़ होते हैं। उन की बात मानोगे अल्लाह कि इताअत का सवाब तुम को मिल जाएगा। अब मोमिन कोई अल्लाह नही है। ये शान अल्लाह तआला ने बढ़ा कर इस अंदाज़ में दे दी है कि यहाँ इताअत के अंदर भी उसको जो अल्लाह की वजह से उसकी इताअत की जाएगी ये उसकी अपनी इताअत नही होगी ये सिमट कर अल्लाह तआला के दरबार की तरफ चली जाएगी।

⑦ शहादत के लिहाज़ से: अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में जहाँ शहादत और गवाही का ज़िक्र किया यानि अल्लाह के एक होने पर गवाही तो अल्लाह तआला ने वहाँ भी मोमिनों का ज़िक्र फरमा दिया। अल्लाह तआला सूरह आले इमरान की आयत नंबर 18 में इर्शाद फरमाता है।
شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ
अल्लाह के एक होने की गवाही सब से पहले अल्लाह तआलाने खुद दी, अल्लाह गवाह हो गया और फिर फरिश्ते गवाह हो गए और फरमाया फिर जिन को तुम में इल्म आ गया अल्लाह ने उनकी गवाही को भी साथ शामिल फरमा दिया तो ये रब्बे जुलजलाल की तरफ से ऐसा अंदाज़ है कि ईमान की हालत में एक बंदा जिस वक़्त क़ामिल बन जाता है तो अल्लाह तआला उस से सिर्फ ख़सारे को ही दूर नही कर रहा बल्कि उस की अज़मतों को भी उजागर कर रहा है।

इख़्तिसार से सात ऐसी चीज़ें मेने बयान की हैं , इस के अलावा बहुत से ऐसे मन्सब हैं और फील्ड हैं कि अल्लाह तआला ने अपना ज़िक्र करने के बाद नबी अलैहिस्सलाम के गुलामों का तज़किरा उसी लाईन में फरमाया है। وَ الْعَصْرِ ۙ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا मेहबूब तुम्हारे ज़माना ए नबुव्वत की कसम सारे इंसान घाटे में हैं मगर जिन्होने तुम्हारा और मेरा कलिमा पढ़ लिया है वह घाटे में नही हम ने उनसे ख़सारे दूर कर दिए हैं। ख़सारे दूर कर के उन को ये नज़ारे अता कर दिए हैं।
मोहतशिम सामईन हज़रात, ये इस्लाम की जो अज़मत है और कलिमा-गौ होना उसका जो मन्सब है ये कोई मामूली सी चीज़ है ? नही नही आज किसी मुसलमान को दूसरे की तरफ ललचाई नज़रों से नही देखना चाहिए। रब्बे क़ाबा की कसम! अमेरिका जैसी करोड़ों हुकूमतें मिल जाएँ एक फक़ीर मोमिन के ईमान की वेल्यु का अंदाज़ा नही लगा सकती ,उस की कीमत का बंदोबस्त नही कर सकती। एक मोमिन जिस ने "अश्हदु अल्लाईलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुहू" पढ़ लिया है तो ये कलिमा उस को कहाँ तक पहुँचाता है और कहाँ तक ले जाता है।
तिरमिज़ी शरीफ जिल्द नंबर 2 सफह नंबर 86 पर ये हदीस शरीफ मौजूद है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं और ये भी हमारे अक़ीदे का गुलशन है दुनिया में रहते हुए मेहशर के वाक़िआत को यूँ बयान किया जैसे हाथ की हथेली पे राई का दाना होता है। हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाने लगे!

हश्र का मैदान होगा,करोड़ो इंसान होंगे, बहुत बड़े स्टेज पर मेरा एक उम्मती अल्लाह के दरबार में पेश हो जाएगा और उसका फैसला होना शुरू हो जाएगा ,सारी इंसानियत देख रही होगी कि उसके साथ क्या बनता है। रसूल अलैहिस्सलाम इर्शाद फरमाते है उस के दफ्तर खोले जाएंगे तो उनकी तादाद 99 होगी और हर रजिस्टर इतना बड़ा है कि जहाँ तक इंसान की निगाह जाती है वहाँ तक वो रजिस्टर फैला हुआ है, इतना मोटा रजिस्टर और ऐसे 99 रजिस्टर उस उम्मती के गुनाहों के हैं जो अल्लाह तआला के दरबार में पेश हो गए हैं अब सारी मखलूक देख रही है कि अब इस बंदे का हश्र क्या होता है अल्लाह तआला उस को किस अंदाज़ में जहन्नम में भेजता है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि रब्बे क़ायनात उस को सामने खड़ा कर के पूछेगा कि "ऐ बंदे! क्या उसमें से तू किसी का इन्कार करता है कि कोई उन रजिस्टरों में एक काम भी ग़लत रिपोर्टिंग की वजह से तुम्हारा लिखा गया हो, तुम ने ग़लती न की हो और फरिश्तों ने लिख दी हो, एक भी काम तुम्हारा ऐसा है जिस पर तुम मआज़िरत करना चाहते हो तो कहो कि यह ग़लत लिखा गया है ? अल्लाह तआला फरमाएगा! कहीं मेरे किरामन कातेबीन ने तुझ पे जुल्म तो नही किया कि तूने काम न किया हो लेकिन उन्होने लिख लिया हो ? वह बंदा कहेगा "नही या रब उन्होने कोइ ग़लती नही की, ये सारा मेरा किया धरा है। मै इतना बुरा था कि रात दिन गुनाहों में डूबा रहता था, मक्कार था और सरकश था। कलिमा पढ़ने के बाद मुझ से कोई अच्छा काम हो न सका और इस तरह मेरी ज़िंदगी बसर होती रही है कि इतने 99 रजिस्तर मेरे करतूतों से भरे हुए हैं, मै इन में से किसी भी चीज़ का इन्कार नही करता।

तो अल्लाह तआला दूसरे नंबर पर फरमाएगा कि अगर इन्कार नही करते, मानते हो कि सब कुछ किया है तो क्या कोई मआज़िरत करना कि तुम ये कहो कि यह हो गया था, बहाना ये थाम मुझे पता नही चला तो ऐसे हो गया। कोई उज़्र करना चाहते हो तो उज़्र कर लो, किसी काम की वजह से मआज़िरत कर लो कि कोई ऐसी सूरते हाल थी जिस से ऐसा काम हो गया। एक काम भी ऐसा बता दो। तो ये शख़्स कहेगा कि ऐ मेरे रब कोई उज़्र नही है मेरे पास। जानबूझ के सारे काम किये थे, कोई मआज़िरत नही, मै क्या कह सकता हूँ, मुझे पता था, मे सब कुछ जानता था, उस के बावजूद मै ये बुराईयाँ करता रहा, मेरा कोई उज़्र नही है जो मै पेश कर सकूँ।

अब जिस वक़्त ये बात सारा मैदाने मेहशर सुन रहा होगा अल्लाह तआला फरमाएगा ऐ मेरे बंदे तुझे तो याद नही लेकिन हमारी बैंक में तुम्हारी नेकी जमा है और मेरी तरफ से तो किसी पर जुल्म होता ही नही और आज तुझ पे कोई जुल्म नही किया जाएगा। उठो और चल के देखो, तराजू के पास चल के खड़े हो जाओ। तुम्हारे आमाल को तौलते हैं और देखो को क्या बनता है ? जिस वक़्त उसको कहा गया कि उठो और देखो, अपना वज़न तो देखो, अल्लाह तआला की तरफ से कहा जाएगा कि मेरे पास तेरा एक छोटा सा कागज़ का कार्ड है, एक छोटा सा पुर्ज़ा है और उस में एक तहरीर यह लिखी हुई है " अश्हदु अल्लाईलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू" , । अब चलो अपना वज़न तो देखो।

एक तरफ ये 99 रजिस्टर रखें और दूसरी तरफ ये कागज़ का पुर्ज़ा रखेंगे, देखो तो सही बनता क्या है ? यह शख़्स अपना हौसला हार चुका है, कहता है या रब, इतने रजिस्टरों के मुकाबले में इस छोटे से पुर्ज़े की क्या हैसियत है। ये तो एक रजिस्टर के करोड़वे हिस्से से भी छोटा है। मेरी बदियों के 99 रजिस्टर हैं और इधर ये एक छोटा सा पुर्ज़ा है, मै क्या देखूँगा जा कर,यहीं से मुझे जहन्नम में भेज दे। ये उस का अंदाज़ होगा। वह ये सोचता है कि मेरा तो अब कुछ बन ही नही सकता,इतने ज़्यादा गुनाह हें और नेकी कोई नही है। अल्लाह तआला फिर फरमाता है चलो तो सही तुम पर जुल्म नही किया जाएगा। अब लोग देख रहे हैं, तराजू के एक तराजू के एक पलड़े में 99 रजिस्टर रखे जाएंगे और वह तराजू ऐसा होगा कि इतने बड़े रजिस्टर उस में आ सकते हैं, एक तरफ वह रख दिया जाएगा , दूसरे पलड़े में वह कागज़ रखा जाएगा जिसमें वह कलिमा लिखा हुआ है जो रोज़ाना सुबह व शाम पढ़ते हो। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि जैसे ही रजिस्टर के मुक़ाबले में दूसरे पलड़े में वह कागज़ रखा जाएगा,तो क्या होआ ? होगा यह कि वो सारे रजिस्टर हल्के पड़ गए और पुर्ज़े वाला पलड़ा भारी हो गया। तो अल्लाह तआला ने उस वक़्त ये फैसला कर दिया और फरमाया कि अल्लाह तआला का नाम ऐसा है भला उस के वज़न की क्या चीज़ हो सकती है। मेरे बंदे तू घबराया हुआ था लेकिन तेरे सीने में ये बात मौजूद थी।इस अंदाज़ से हश्र के दिन अल्लाह तआला इस अज़मत को वाज़ेह करेगा। लिहाज़ा ये कलिमा जो हमें मयस्सर है इस को पढ़ के फिर इसके तकाज़े पूरे करने का सोचना चाहिए। कभी ये मोमिन की शान नही कि वह ये सोचे कि मेरे पास तो हे ही कुछ नही, सारी दुनिया तो दुनिया वाले ले गए हैं, मै बिलकुल नादार रह गया हूँ। नही नही उसे कौन नादार कहता है, उसके सीने में वह कुछ है जो 99 रजिस्तरों से भी भारी वज़न रखने वाला है।

अब इस मरहले से इंसान जिस वक़्त आगे गुज़रता है चूँकि अगर ईमान के साथ अमल नही है तो ये रब की शान है चाहे तो मुआफ कर दे लेकिन क़ानून के मुताबिक़ अगर चाहे तो उस को जहन्नम में भेज दे पर कलिमा ए इस्लाम का असर फिर भी रहेगा। जिस ने कलिमा ए इस्लाम नही पढ़ा वह हमेशा जहन्नम में रहेगा। जिस ने कलिमा ए इस्लाम पढ़ा वह गुनाहों की सज़ा ले कर बिल आख़िर जन्नत में दाखिल हो जाएगा। लेकिन जहन्नम में जाना ही न पड़े इसके लिए आगे निसाब दे दिया।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ फरमाया जिन्होंने ईमान के बाद नेक काम किए उन को अल्लाह तआला बड़ी कामियाबी अत फरमाएगा। मजमूई तौर पर सारी सिफात जमा होंगी। अब अमले सालेह की हैसियत को देखो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया इसको ईमाम अहमद बिन हंबल रदियाल्लाहु अन्हु ने अपनी मसनद में रिवायत किया है। जिस वक़्त इंसान अपनी क़ब्र मेम पहुँचेगा और सवालात का मरहला गुज़ारा जाएगा। मेरे बेहबूब अलैहिस्सलाम की क़ब्र में जल्वागिरी हो चुकी होगी और ये बंदा ए मोमिन पहचान चुका होगा। जब क़ब्र में फरिश्ते पूछ रहे थे "तुम इन के बारे में क्या कहते हो ? तो बोल रहा था

"ग़मे हिज्र में मौत का मुन्तज़िर था, सुना था क़ब्र में दीदार होगा"

मेने तो ज़िंदगी के दिन इस मुलाकात ले लिए गुज़ारे थे और अब पूछते हो मुझसे कि ये कौन हैं ? ज़िंदगी भर उन का नाम लेता रहा, रब की रबूबियत का भी बयान हो गया, दिन की अज़मत का भी बयान हो गया,मेहबूब अलैहिस्सलाम की पहचान का भि तज़किरा हो गया। मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम इर्शाद फरमाते हैं- फिर क़ब्र के अंदर एक इंसान जल्वा गर हो जाएगा। एक रजुल आ जाएगा। ये ग़ैब नहि तो और क्या है। क़ब्र खुद ग़ैब है और ये हज़ारों का मामला है। मेरे मेहबूब अलेहिस्सलाम फरमाते हैं "क़ब्र मे एक रजुल आ जाएगा और वह क़ब्र मेम पहुँचेगा तो तो उसका तआरुफ क्या होगा उस कि चाहत क्या होगी ? वह निहायत खूबसूरत होगा, बड़े खूबसूरत कपड़ों वाला बड़े खूबसूरत चेहरे वाला। और अच्छी खुशबू वाला अचानक क़ब्र में रौनुमा हो जाएगा। क़ब्र वाला देख के बड़ा तआज्जुब करेगा और कह उठेगा तुम कौन हो ? ये कहेगा खुश हो जाओ क़ब्र वाले! मै तुम्हें यह बशारत देने आया हूँ ये वह दिन है कि जिस के वादे कुरान ने किये थे, जो नेकी करेगा क़ब्र में उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खुल जाएंगे अब मै तुझे बशारत देने के लिये आ गया हूँ। ये बंदा जो क़ब्र में है फिर पूछता है कि बताओ तो सही कि तुम कौन हो ? यहाँ तो कोई आ ही नही सकता ,ये दिवार ही ऐसी है जहाँ से भाई भी पीछे पलटते हैं और बेटे भी पीछे चले जाते हैं , जिगरी दोस्त इस दिवार को क्रॉस नही कर सकते और बड़ी पक्की दोस्तियों के पैवन्द ढीले पड़ जाते हैं। "हाए ग़ाफिल वो क्या जगह है जहाँ, पाँच जाते हैं चार फिरते हैं"। वह उठा के ले जाते हैं और छोड़ के आ जाते हैं। अब क़ब्र का मक़ीं पूछता है कि यहाँ तो कोई आ ही नही सकता । सिर्फ मेरे दिल के मेहबूब आ सकते थे उनकी तो जल्वा गिरी होगी, तुम बताओ तुम कौन हो और कैसे आ गए हो ? तुम्हारा चेहरा देखने से लग रहा है कि तुम अच्छी नियत से आए हो, मगर तुम ये तो बताओ कि तुम कौन हो ? जिस वक़्त क़ब्र का मक़ीं ये पूछेगा तो आगे से जवाब मिलेगा। बड़ा कीमती जवाब है और आज ये दिल की तख़्ती पर लिखने वाला जवाब है। मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम फरमाते हैं वो इंसान जो क़ब्र में नूरी पैकर है, खूबसूरत है वह क़ब्र के मक़ीं को कहेगा। ऐ बन्दे मै तेरे नेक आमाल हूँ। वह दुनिया की तेरी नेकी वह दुनिया की तेरी परहेज़गारी वह दुनिया का तेरा तक़्वा, वह अल्लाह के दरबार में सजदे वह तेरे हाथों का सदक़ा व ख़ैरात, वह तेरा मैदाने जिहाद में कुफ्फार को पछाड़ना और वह तेरा हज और वह तेरे लब का दुरूदो सलाम वह तेरी आँखों का आँसू तेरा कुरआने मजीद की स्टडी (मुताअला) और वह तेरी बंदगी के सारे तक़ाज़े

ऐ बन्दे घबरा नही मै तेरी नेकी हूँ तुझ से मिलने आई हूँ। اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये- अमले सालेह कितना बड़ा ज़रिया है, अमले सालेह कितना बड़ा सहारा है और अमले सालेह कितना बड़ा फायदा हे। जहाँ और कोई नही जा सकता वहाँ भी पीछे जाता है, पीछे पहुँचता है। मेहबूब अलैहिस्सलाम ने ग़ैब का मसअला बयान किया है हमारा तो १०० फीसद यक़ीन है कि बिल्कुल सच बयान फरमाते हैं और हमारे नबी वही बयान फरमाते हैं जो अल्लाह की तरफ से वही कि जाती है। उस ज़बान से यह ऐलान कर रहे हैं। वह रजुल यक़ीनन क़ब्र में आता है, आ के बताता है। अब आज हम अपने दोस्तों के साथ गप्पे लगाते हुए दिन गुज़ार देते हैं, रात गुज़ार देते हैं ये तो बेवफाई की दोस्ती है क़ब्र पर जा के टूट जाएगी। अगर पहले न भी टूटी क़ब्र तक जा कर खत्म हो जाएगी। मगर अमले सालेह की दोस्ती वो है जो क़ब्र में भी साथ रहेगी।

तो आज हमें ये देखना है कि मोमिन का मक़सदे हयात क्या है ? सब से पहले ईमान उस को मयस्सर है, फिर अमले सालेह के लिये दिन रात गुज़ार देना। इसी चाहत में रहना, हर वक़्त ये सोचना कि कौन कौन से काम हैं जो करूँगा तो मेरा रब मुस्कुराएगा और राज़ी हो जाएगा, हर वक़्त इसी तड़प में रहता है और इसी तलाश में रहता हे तो अल्लाह तआला इतना पसंद कर लेता है कि अब इस माहौल में जहाँ किसी के लिये कोई पुरसाने हाल नही, अल्लाह तआला ने अमल को अच्छी सूरत देकर भेजा है। ऐ तहज्जुद मेरे बन्दे के पास जा जो तुझे पढ़ता था। उस को जा के दिलासा दे। तिलावते कुरआने मजीद अच्छे कपड़े पहन ले और खूबसूरत बन के क़ब्र में पहुँच जा, ये इंसान बीस तकआत तरावीह में पढ़ता/सुनता था तुझे, उसने पूरी ज़िंदगी तुझे पढ़ने/ पढ़ाने में गुज़ारी थी, तो ऐ कुरआन जा के उस को एक पैग़ाम दे दो। कि "मै तुम्हारा नेक अमल हूँ"। क़ब्र के उस माहौल में बन्दे का नेक अमल उस से मुलाकात भी करेगा और खुशखबरी भी सुनाएगा।

यहाँ ज़िमनन ये बात भी अर्ज़ कर दूँ कि कुछ लोगों के छोटे छोटे ज़ाबते हैं। जब रसूले अकरम सल्लल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम को रजुल कहा जाए, रजुल अरबी ज़बान में मर्द को कहते हैं तो तो वह फौरन बोल उठते हैं कि अगर नूर होते तो रजुल क्यों कहा जाता, नूर होते तो लफ्ज़े रजुल क्यों बोला जाता ?

हदीस देखो क़ब्र में एक रजुल आता है। तो पता चला रजुल कभी मिट्टी का भी होता है और रजुल कभी नूर का भी होता है और इस अंदाज़ में उसका ज़हूर होता है कि वह आता है और मुश्किल हल भी कर जाता है। कहता है " क़ब्र वाले खुश हो जा मै तुझे खुशी का पैगाम देने आया हूँ।

मोहतशिम हज़रात ! जिस वक़्त इंसान को ये सूरते हाल अमले सालेह की मयस्सर है उस की वजह से उस की ज़िंदगी में बहार है और इन्किलाब है और इसमें अगर किसि तरह की कोताही हो गई तो फिर उस को जो ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ेगा उस का अंदाज़े बयान भी इस तरह का है रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जिस वक़्त इंसान अमले सालेह की हैसियत को भूल जाता है उस वक़्त हलाकतें दुनिया में भी हैं उक़बा में भी हैं। और हक़ीक़ी मोमिन को अल्लाह तआला दुनिया में भी बहार देता है, बरज़ख़ का महौल भी एक अलेहदा ज़िंदगी का होता है। उठता है तो फिरदौस के बालाखाने उस के क़दम चूमने का इंतेज़ार कर रहे होते हैं।

अज्जवाज़िर की जिल्द नंबर २, सफह १८५ पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान मौजूद है। आज हामे सामने जो मुखतलिफ मसाईल वो इस वजह से हैं कि ईमान की कमज़ोरी है, ईमान की कमज़ोरी न रहे तो कोई कमज़ोरी बाक़ी नही रहेगी, इस वास्ते कि जो हबीबे कुलूब हैं और तबीबे कुलूब हैं उन्होने उस वक़्त चेक-अप कर के बता दिया था कि क्या क्या हो जाएगा, कैसे अमल की कमी आ जाएगी और उस अमल की कमी की वजह से कैसे ख़सारे होंगे । जो इंसान कामियाब ज़िंदगी गुज़ारना चाहता है अपने मक़सदे हयात को पाना चाहता है, मेहबूब अलैहिस्सालाम फरमा रहे हैं जो हमने निशानदेही की है उन वादियों से बच के रहोगे तो ज़िंदगी का मक़सद मुकम्मल हो जाएगा। क्या हिक़्मत भरा जुम्ला है। बैहक़ी ने इस को दलाईल में और हाकिम ने इस को अपनी मुस्तदरक में ज़िक्र किया है।

कितना रौशन जुम्ला है- **" मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम इर्शाद फरमाते हैं कि जिस कौम के अंदर फहाशी आएगी, उस कौम में बन्दों को वह बिमारियाँ होंगी जिन का कभी नाम भी नही सुना गया था।"**

बाप दादा को वह मर्ज़ कभी लगा ही नही था। इंसान उस बिमारी का नाम ही नही जानता। कब पेदा होगी फरमाया जब फहाशी आएगी, उरयानी आएगी, बेहयाई आएगी, औरतें नंगे सिर फिरेंगी, बेहिजाब रहेंगी, उस वक़्त न चेहरे का पर्दा होगा न बालों का पर्दा होगा, जिस वक़्त मुआशरे में इंसान की आँख साफ नही रहेंगी और फहाशी का लावा फट जाएगा तो मेरे मेहबूब अलेहिस्सलाम इर्शाद फरमाते हैं अमले सालेह की नफी की वजह से क्या होगा, फरमाया वह दर्द होंगे जिन का कभी नाम भि न सुना होगा। ताऊन का मर्ज़ आ सकता है। आज तुम खुद मुशाहिदा कर रहे हो ऐसी ऐसी बिमारियाँ जन्म ले रही हैं आज से पहले का इंसान जब साइंस के नाम की कोई चीज़ न थी वह बिमारियों से मेहफूज़ था। आज तरक्की भी हो गई लेकिन मुसलसल ऐसी बिमारियाँ आ रही हैं तो हलाकत इस वजह से आएगी कि अमले सालेह में कमी की वजह ये सज़ा का एक सिलसिला जो अल्लाह तआला की तरफ से मुखतलिफ नई बिमारियों की शक्ल में सामने आ जाता है।

مَابَخَسَ قَوْمٌ اَلْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِلَّااُخِذُوْابِالسِّنِيْن

दूसरे नंबर पर मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फरमाया : "जो कौम ज़कात देने से इंकार कर देती है, अल्लाह तआला बारिश बरसाने से इंकार कर देता है। अगर ज़मीन पर चौपाए न होते तो अल्लाह तआला कभी भी बारिश न बरसाता। अब जो कुछ आती है तो उन हैवानों कि वजह से या ज़कात देने वाले इंसानों की वजह से बाक़ी का भी गुज़ारा हो रहा है वर्ना ये अमल ऐसा है जिस वक़्त कसरत से लोग अदाएगी ए ज़कात से पीछे हट जाते हैं तो अल्लाह तआला अपनी रेहमतों के दरवाज़े बंद कर देता है और उस कौम को आज़माईश में मुब्तिला कर देता है। अमले सालेह की नफी कैसे होती है ? फरमाया!

आज लोग ये तो सोचते हैं कि कहीं लोग हमसे नाराज़ न हो जाएं। लेकिन मोमिन की ये शान है कि वह बंदों की नाराज़गी का नही, अल्लाह की नाराज़गी का खोज लगाता है। ऐसा तो नही हुआ कि हम से कोई ऐसी ग़लती हो गई है जिस से रिज़्क़ की बरकत उठ गई है। आख़िर वजह क्या है ? मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

जिस कौम के अंदर कम तौला जाता है, कम नापा जाता है तो उस कौम पर क़ह्त मुसल्लत कर दिया जाता है।

जिस वक़्त अमले सालेह की ये शिक मुआमलात में अमानत और अदालत फौत हो जाएगी फिर खुद मसाईल भूख के आ जाएंगे और कई मसाईल आ जाएंगे। हमारा बहैसियते मोमिन सबसे पहला ये फर्ज़ बनता है कि हम पहले उन स्बाक़ को देखें कि जिन को सरकार पहले बयान कर चुके हैं। अगर चाहते हो कि क़ह्त से बच जाएं, अगर चाहते हो कि नहुसतों से मेहफूज़ हो जाएं , अगर चाहते हो कि नई नई बिमारियों से मेहफूज़ हो जाएं तो फिर वो काम करो जो इलाज सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान किये हैं। मुआशरा अमन व सलामती का गहवारा कब बनेगा ? वो उस वक़्त बनेगा जब तहारत होगी, तक़्वा होगा, बेहयायी नही होगी, उरियानी फहाशी का दौर दौरा नही होगा। जब नाप तौल के पैमाने मुकम्मल होंगे, झूठी कसमें उठा कर सौदे नही बैचे जाएंगे, जब ताजिर सच्चा होगा तो मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम इर्शाद फरमाते हैं कि अल्लाह गली गली मोहल्ले मोहल्ले रहमतों के जुलूस नाज़िल फरमाएगा। इस से अगला मसअला इस से भी बड़ा सख्त है। मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि जब कौम ख़यानत करने वाली हो जाती है तो उसे अपने हुक्मरानों के ज़ुल्म का सामना करना पड़ता है, उस कौम के लोग अपने इक्तेदार वाले लोगों के जब्र व तशद्दुद के निशान बन जाते है क्युँ कि उन्होने खुद अपने आपको यूँ बिगाड़ लिया। ये हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान हैं जो आज भी उम्मत के दिलों में अपने असर को मुरत्तब कर रहे हैं और ये ही दीन का तक़ाज़ा है और ये ही मोमिन का मक़्सदे हयात है कि अपनी ज़िंदगी से हर उस कांटे को काट के जड़ से निकाल दे जिस से सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया है और हर वो फूल जिस को दिल के आँगन मे लगाने का हमारे नबी ने हुक्म दिया है अपने दिल में बसा ले ।

अगर तुम चाहते हो कि ख़सारे से बच जाएं (दुनिया में भी और आख़िरत में भी) तो फिर ईमान के साथ अमले सालेह भी करो। अमले सालेह करोगे तो कामियाबी का सबूत आ जाएगा।

मोहतशिम सामईन हाज़रात!

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया " जिस वक़्त मेरी उम्मत में कुरआनो सुन्नत को मोअत्तल (छोड़) दिया जाएगा, कुरआन को महज़ कसमें उठाने के लिये बना लिया जाएगा, कुरआनो सुन्नत से मसअला नही पूछा जाएगा, उन से फैसला नही लिया जाएगा। मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम ने फरमाया "मुसलमानों में खानाजंगी शुरु हो जाएगी। आपस में लड़ाई शुरु हो जाएगी।

तो ये सारे अमराज़ और इनका इलाज बयान कर दिया गया है। वह मरीज़ कितना बेवकूफ है कि जिस की बिमारी का भी ज़िक्र कर दिया जाए और इलाज भी बता दिया जाए और फिर भी वह बिमार होता रहे और अपनी सेहत का न सोचे। इस से गया गुज़रा और कौन हो सकता है। ये जो फहमे दीन कोर्स का हिस्सा हम पढ़ रहे हैं ये हमारे दिल की धरती पर दस्तक दे रहा है कि हमें उन सारी बिमारियों से अल्लाह के फ़ज़्ल से बचना है और कुछ लोग बाचे हुए हैं लेकिन अभि बहुत सा काम बाक़ी है। तो ये हमारे नबी अलैहिस्सलाम का फरमान है जो हमारे ईमान की जान है। और इस ने हमें वाज़ेह कर दिया है कि अगर तुम चाहते हो तो फिर , बाक़ी इम्सान तो खसारे में है लेकिन ईमान के साथ जिस वक़्त अमले सालेह की तरफ आओगे तो अल्लाह तआला इस कदर नवाज़ेगा कि उस की वजह से हर लम्हा बरक़त की खुशबू का बन जाएगा और हर तरफ अल्लाह तआला बहार ही बहार अता फरमाएगा।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

वो कामोयाब हैं जो ईमान भी ले आए और मुत्तक़ी भी बन जाए मगर सिर्फ खुद ही नही औरों को भी मुत्तक़ी बनाए-

खुद सरापा नूर बन जाने से कब बनता हे काम,

तुझको इस ज़ुल्मतकदे में नूर फैलाना भी है।

हक़ ने कर दीं खिदमतें तेरे सुपुर्द,

खुद तड़पना ही नही,औरों को तड़पाना भी है।

ए अज़ीम लोगों ये बात सुन रहे हो- ऐ अज़ीम परदे की हामिल ख़्वातीने इस्लाम- ऐ मुस्लिम उम्मा की दुख़तरान ये बात तुम्हारे लिये भी पूरी ज़िंदगी का निसाब है- ऐ अज़ीम इस्लाम के बेटों ये हमारे हर वक़्त का निसाब है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अल्लाह के कुरआन ने लाज़िम कर दिया है وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

लोगों को बचाने के लिए किरदार अदा भी करो। डूबने वाले डूबते रहें और तुम अपना मुसल्ला समेट के किसी कोने में बैठे रहो तो अल्लाह तआला ऐसे तक़वा को पसंद नही करता। वह तब पसंद करता है जब तुम मेदान में आ जाओ और गंदगी और नहूसत के मैदान में खड़े हो कर अल्लाह का पैगाम सुनाओ। कोई मानता है मान जाए, नही मानता है न माने। मोअज़्ज़िन का काम आज़ान पढ़ना है, नमाज़ी आए फिर भी भला हे न आए फिर भी तो उस ने हक़ अदा कर दिया। इस वास्ते हक़ का अलमबरदार बनके जो समझा है उस को याद कर के आगे आप को किरदार भी अदा करना है कि जिस की वजह से अल्लाह तआला हमारी नेकी को जो कर सके हैं मेहफूज़ कर देगा। इस में अज़मतें देगा,तरक्की होगी और उस की वजह से औरों की ज़िंदगी भी सँवर जाएगी। इस सिलसिले में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने मिसाल देकर समझा दिया- " कुछ लोग हैं जो गुनाहों में डूबे हुए हैं, कुछ वो हैं जो पारसा हैं किनारे पे खड़े देख रहे हैं- उन की मिसाल क्या है ? फरमाया जिस तरह एक बहरी जहाज़ होता है। उसके दो तबक़े हैं। एक नीचे पानी में और दूसरा ऊपर हैं। अब दोनो का अपना अपना हिस्सा है। ये हमारी पॉलिसी का हिस्सा है कि हम कहते हैं कि "शैख़ अपनी देख"। ये इस्लाम का जुम्ला नही है। ये दीन ए इस्लाम का पेग़ाम नही है। ये किस तरह हमें सोचना होगा, मेरे मेहबूब अलेहिस्सलाम फरमाते हैं:- सोसायटी में दो तबक़े हैं एक नेकों का है दूसरा बुरों का है और ये मिसाल है कि जिस तरह बहरी जहाज़ समन्दर मेम चल रहा है, एक हिस्सा निचला है और दूसरा ऊपर वाला है। नीचे लोगों को पानी की ज़रूरत पड़ती है तो ऊपर जाते हैं डोल लटकाते हैं और पानी ले कर जाते हैं। ऊपर वालों को तकलीफ होती है कि बार बार आ रहे हैं- नीचे वाले भी तंग आ गए, कहते हैं कि चलो ठीक है ऊपर वाले पानी नही भरने देते तो हम यहाँ से ही सुराख़ कर लेते हैं आख़िर ये हमारा हिस्सा है, जो चाहे करें। मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम फरमाते हैं - क्या हुआ ? हुआ ये कि निचले तबक़े के एक शख़्स ने कुल्हाड़ा पकड़ लिया और उसने किश्ती (जहाज़) के अंदर सुराख़ करना शुरू कर दिया। जिस वक़्त सुराख़ होना शुरु हुआ तो ऊपर के हिस्से में रहने वालोम का इम्तिहान शुरू हो गया। जब उन्होने देखा कि वो तो सुराख़ कर रहा है, अब अगर ये पॉलिसी हो कि कोई कुछ भी करे हम अपनी जगह बेठे रहेंगे तो क्या होगा ? होगा ये कि वो सुराख़ कर लेगा जहाज़ में और पानी जहाज़ के अंदर दाखिल हो जाएगा सिर्फ नीचे वाले ही नही बल्कि ऊपर वाले भि डूबेंगे। सब डूब जाएंगे, सब फना व तबाह व बरबाद हो जाएंगे। हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि अगर वो ऊपर वाले आ गए और उस शख़्स के हाथो को पकड़ लिया कि होंश कर भाई ये क्या कर रहा है ? हमें भी डूबो देगा और खुद भी डूबेगा। भाई पानी ऊपर आ कर ले लिया कर , ये सुराख़ न कर- फरमाया अगर वो हाथ पकड़ लेंगे खुद भी बच जाएंगे, अगर न पकड़ेंगे तो वह भी मर जाएंगा ये भी मर जाएंगे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिस तरह बकरियों-भैड़ों का एक भैड़िया होता है इसी तरह इंसानों का भी एक भैड़िया होता है। भैड़ों का भैड़िया और हे और इंसानों का भैड़िया और है। भैड़ों का भैड़िया जो मश्हूर है औए इंसानों का भैड़िया शैतान है।

तो तीन किस्म की भेड़ों को भेड़िया उठाता है और फरमाया तीन किस्म के इंसानों को शैतान उठा के ले जाता है। ये आख़िर सबक है इस में हमें कोशिश करना है कि इन तीन किस्मों में कोई नही बनना।

वो भैड़ों की क्या क्या किस्में हैं फरमाया!

1. वो भैड़ें हैं जो कारवां के साथ नही चलती, पीछे पीछे रहती है क्योंकि उसको कारवां से नफरत है। वो कहती है बाकी भैड़ें गंदी हैं, मै बड़ी सुथरी हूँ। वो कारवां के साथ नही रहती तो जब कारवां से वह भैड़ जुदा हो जाती है, कारवां तो इकठ्ठा था इज्तिमाइय्यत की बरक़त से मंज़िल तक पहुँच जाता है और वो बैचारी शैतान के पंजे में आती है और मारी जाती है। इस वास्ते कोई बंदा हम में ऐसा न हो जो अपने ही कारवां पर तन्क़ीद कर के नफरत कर रहा हो और नफरत का वो हामी बन चुका हो ,जिस को अपनी जमाअत पसंद नही, अपना अक़ीदा पसंद नही, अपने नज़रियात पसंद नही, अपने मुआमलात पसंद नही—ये एक फैशन बनता जा रहा है। इस्लाम पे तन्क़ीद करना (सुन लो मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम फरमा रहे हैं) जो इस तरह करे कि कारवां मस्जिद में है और वह सिनेमा में बैठा हुआ है। कारवां रोज़े र ख रहा है और वह दिन को खाने खा रहा है। कारवां नमाज़े तरावीह में है और वह बाज़ार में गपशप लगा रहा है। कारवां अहम मंसब पे पहुँच चुका है और उस को उन नेकी के कामों से नफरत है। हमारे आक़ा ने फरमाया कि भैड़िया आएगा और उठा ले जाएगा। सारी ज़िंदगी उस की कैद में ही बसर करना पड़ेगी।

2. दूसरी भैड़ कौन सी है ? फरमाया ! वो है जिस को कारवां से नफरत तो नही लेकिन वो लालची भैड़ है, उस ने एक चरागाह देखी हुई है। वो कहती है सारी चली जाएं मै अकेली वहाँ जाऊँगी। अगर ये सारी मेरे साथ होंगी तो मेरे हिस्से में तो कुछ नही आएगा,इसलिये मै अकेली जाऊँगी। अब सारी भैड़ें अपनी मंज़िल पे चली गईं , ये लालच के मारे पीछे रही कि अभी जा के मै किसी के डॉलर पे पलती हूँ और अभी किसी के रियाल लेती हूँ और अभी किसि के नज़ारे लेती हूँ। जिस वक़्त ये भैड़ कारवां से जुदा हुई तो आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि भैड़िया आ गया इसको उठा कर ले गया। लालच कुछ काम न आया। ये भैड़ भी मारी जाएगी। तो फरमाया मेरी उम्मत का कोई बंदा ग़ैरों के रिज़्क़ को देखकर , उन के पैसों को देख कर और ग़ैरों की चमक को देखकर कारवां को छोड़ के न जाए। लालची न बने। कारवां भुखा भि मंज़िल पे पहुँच जाएगा, वो लालच के मारे मारी जाएगी। और फिर कभी अपनी ज़िंदगी को बचा नही सकेगी। बाज़ लोग किसी मज्लिस की एक चावल की प्लेट पर बिक जाते हैं और चले जाते हैं कि वहाँ ये हो रहा है और मिल जाएगा। आज तो आइसक्रीम के और मुख़तलिफ किस्म की दावतों के सिलसिले नमाज़े तरावीह के साथ शुरू हो चुके हैं। तो ऐसे मे अपने आप को हौशियार और मोहतात रखना लाज़िम है। और कहीं लालची भैड.ा की तरह उन की तरफ न देखो। कारवां के साथ रहो। कारवां भुखा ही सही अल्लाह वाला तो है, इसके साथ रहोगे बेड़े पार हो जाएंगे।

तीसरे नंबर पर वो भैड़ है जो न लालची है और न ही नफरत करने वाली है कि उस को अपने कपड़ों पे ज़्यादा नाज़ हो कि मै बड़ी नफीस हूँ और दूसरी नफीस नही। वो भैड़ कैसी है ? फरमाया सिर्फ सुस्ती की मारी हुई भैड़ है। उसका और कोई मर्ज़ नही बल्कि सुस्ती में है। उस को पता ही नही कि कारवां कहाँ है ? दुकान में मसरूफ है, खेत में मसरूफ है, फेक्ट्री में मसरूफ है। इसको पता ही नही कितने मुसलमान शहीद हो गए, कितने ज़लज़ले में आ गए और कितने मुसलमान बेघर हो गए। ये बस सुस्ती की मारी हुई भैड़ है। कारवां कहीं चला जाता हे ये कहीं बैठी रहती है, इस को भी भैड़िया उठा के ले जाता है।

ये तीन भैड़ें हैं जिन के बारे में ये ख़तरा है, बाकी कारवां सलामती के साथ मंज़िल पे पहुँचता है। मस्लक़ ए हक़ अहलेसुन्नत वल जमाअत से और इस्लाम की इस अहम तशरीह के साथ तआल्लुक रखने वालों सिराते मुस्तक़ीम पे चलते हुए हम पे लाज़िम है कि हम कभी भी दाएं बाएं की वादियों और खेतों और खलिहानों की तरफ मुतवज्जे हो कर उम्मत के कारवां से जुदा न हों। इस उम्मत के कारवां से थोड़ा सा कोई हट जाएगा अपनी सोचो-फिक्र और चाहत के लिहाज़ से जुदा हो जाएगा। तीन